भारत के दक्षिण क्षेत्र में प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा पाठ्यपुस्तकों में दृश्य चित्रण का अध्ययन

रमेश कुमार*

प्राथमिक स्तर पर निर्मित पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की अहम भूमिका होती है। बच्चों में चित्रों के माध्यम से विषयवस्तु की समझ विकसित होती है। उन्हें कल्पनालोक में विचरण करने के लिए चित्र ही आधार उपलब्ध कराते हैं। उक्त अध्ययन प्राथमिक स्तर पर दृश्य चित्रों के अध्ययन के बारे में है। इस अध्ययन में दक्षिण भारत के राज्य सम्मिलित हैं। चित्रों में बहुत सारी बारीकियों, जैसे— चित्र का आकार, रंग, संवेदनशीलता आदि, का अध्ययन किया गया है। इस लेख का उद्देश्य भविष्य में हिंदी पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता को बढाना है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। वर्तमान में प्रचलित पाठ्यपुस्तकें भी इसी बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास करती हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है।

नन्हे -मुन्नों को खेलना बहुत पंसद है अत: सभी राज्यों की पुस्तकों में खेल गीत के साथ ही बहुत सारे रंग-बिरंगे चित्र शामिल होते हैं। ये चित्र बच्चों के मनोरंजन के साथ ही बहुत सारे संदेश अपने में समेटे हुए हैं जिन्हें कक्षा अध्यापक आसानी से बच्चों को बातचीत के दौरान देते रहते हैं। बच्चों को भी इस प्रकार के संदेशों का ज्ञान बोझिल नहीं लगता है। यदि बच्चों को उदाहरणों के माध्यम से संदेश दिए जाएँ तो बच्चे न सिर्फ़ इन्हें ग्रहण करते हैं, बल्कि उन्हें अपने व्यवहार में भी लागू करते हैं। विभिन्न राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में विद्यालय की तसवीरें अनेक बार आई हैं। बच्चों के साथ बात करके उन्हें विभिन्न चित्रों को दिखाते हुए स्वच्छता के महत्व पर चर्चा की जा सकती है। बच्चे आनंदित होकर न सिर्फ़ इसे ग्रहण करेंगे बल्कि इसे अपने व्यवहार में भी लागू करेंगे। चित्रों का महत्व व्यापक है। इस पर लगातार बातचीत करके हम बच्चों के स्तर पर आसानी से उतर सकते हैं।

अभिभावक हमेशा पढ़ने के अभिप्राय को अक्षर ज्ञान से लेते हैं। उन्हें लगता है यदि बच्चों ने अक्षर ज्ञान का अर्जन कर लिया तो पाठन क्रिया अच्छे से हो रही है। परंतु वे यह नहीं जानते कि सिर्फ़ अक्षर ज्ञान ही पाठन का आधार नहीं है। बच्चे विभिन्न क्रियाएँ करते हैं, जैसे— कल्पनाशीलता, सर्जनात्मकता

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., दिल्ली

© NCERT not to be republished

आदि। बच्चे विभिन्न दृश्यों को देखते हैं तथा उनके आधार पर अपने मस्तिष्क में तमाम धारणाएँ बनाते हैं जिनका परीक्षण यथार्थ या काल्पनिक रूप में चलता है। यदि उनका परीक्षण उनकी धारणाओं के अनुकूल हुआ तो वह छोटी सी बात उनके मस्तिष्क में दीर्घकालीन रूप से संचित हो जाती है और वह ज्ञान के एक अंश को ग्रहण कर लेता है। तात्पर्य यह है कि बच्चे खुद के परीक्षण, निरीक्षण से संग्रहित ज्ञान को दीर्घकालिक समय तक याद रख पाते हैं। वास्तव में *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* भी इसी प्रकार के विचारों पर ज़ोर देती है कि समझ के साथ विषयवस्तु को किस प्रकार जोड़ा जाए।

वास्तव में देखा जाए तो पाठ्यपुस्तकें बच्चों के संज्ञान में अभिवृद्धि करने के कई आधार प्रदान करती हैं। उन्हीं में से एक है— चित्रों का ज्ञान। बच्चे चित्रों को ध्यान से देखते हैं और उन्हें समझने का प्रयास करते हैं। उनमें कुछ बारीकियों को वह अपने शिक्षकों एवं अभिभावकों से बात करके और कुछ उनके अनुसार प्रयोग करके उसका ज्ञान अर्जित कर लेते हैं।

रा.शै.अ.प्र.प. (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्) द्वारा किताबों का निर्माण हर वर्ष किया जाता है। एक शोधकर्ता के रूप में यह जानने का प्रयास किया कि हिंदी की विभिन्न पाठ्यपुस्तकों में संलिप्त चित्रों का आशय एवं उसकी प्रकृति क्या है, जिससे पाठ्यपुस्तकें और अच्छे ढंग से बनाई जाए और बच्चों में इन पाठ्यपुस्तकों के प्रति रुचि उत्पन्न हो। वे इन पाठ्यपुस्तकों को पढ़ने के लिए लालायित रहें।

बच्चों में सीखने की प्रक्रिया

यदि हम बच्चों में सीखने की प्रक्रिया का तर्कसंगत अध्ययन करते हैं तो हमारे सामने निम्न बताए तथ्य उपस्थित होते हैं—

- छह माह की आयु का बच्चा औसतन रंग-बिरंगे चित्रों वाली किताब देखता है। वह चित्र को देखने की कोशिश करता है। लाल रंग उसे आकर्षित करता है। वह कागज़-किताब को छूने का प्रयास करता है।
- नौ माह की आयु का बच्चा सुनने की गतिविधि को गौर से देखता है। वह गौर से चेहरा देखता है। हर बात को सुनने की कोशिश करता है। यही वह समय है जब अभिभावक उसे यूँ ही कुछ न कुछ पढ़ कर सुनाते रहें। वह सुनकर शब्दों को समझने की कोशिश करेगा। यह और बात है कि उससे प्रत्युत्तर की कोशिश नहीं की जानी चाहिए।
- एक साल की आयु का बच्चा किताब-अखबार को छीनने का सफल प्रयास करने लगता है। वह हर किताब-पन्ने-पत्रिकाएँ अपनी मुट्ठी में कर लेना चाहता है। इस उम्र के बच्चे को छोटी-छोटी कहानियाँ पढ़कर सुनाई जानी चाहिए। रंगीन चित्र दिखाने चाहिए। संभव है ऐसा करते समय पन्ने फट सकते हैं। वह फाड़ते समय आ रही ध्वनि से आनंद लेता है। आप पुराने अखबारों से भी यह गतिविधि उसके साथ कर सकते हैं।
- दो साल का बच्चा किताबें पसंद करने लगता है। यदि बड़े, स्पष्ट और रंगीन चित्र हैं तो वह इशारा करता है। टूटे-फूटे शब्दों में किताब माँगने की कोशिश करता है। उसे ज़ोर-ज़ोर से पढ़ कर कहानी-कविता सुनाई जानी चाहिए। बच्चे को

© NCERT not to be republished

किताबों से खेलने दीजिए। पुराने रंगीन अखबारों के चित्रों पर अँगुली से इशारा करते हुए बातचीत की जानी चाहिए।

- तीन वर्ष की आयु के बच्चे की क्रियाशीलता बढ़ जाती है। इस उम्र तक आते-आते बच्चा हर चीज़ स्वयं जानने की कोशिश करने लगता है। वह हर चीज़ को छूना चाहता है। वह सुनकर हर बात को अपनी समझ से समझने की कोशिश करने लगता है। यही समय है, जब उसे छोटी-छोटी कहानियाँ एवं गीत पढ़कर सुनाएँ।
- चार साल की आयु का बच्चा तो बेहद तीव्रता से प्रकृति, सूरज, चाँद, तारों, जीव-जंतुओं के प्रति जिज्ञासु हो जाता है। उसके पास इनसे संबंधित सैकड़ों प्रश्न होते हैं। उसे ऐसी किताबों से कुछ न कुछ पढ़ कर सुनाएँ, जिसमें रहस्य हो, रोमांच हो जिससे उसकी कल्पना को और पंख लगें। अच्छे-अच्छे गीतों की ओर इशारा करें। सुनाएँ गए गीतों की व्याख्या करें।
- पाँच साल की आयु तक आते-आते बच्चा कहानियों को न सिर्फ़ सुनता है बल्कि वह कहानियों पर अब प्रश्न भी करने लगता है। कहानी पूरी हो जाने के बाद उसके पास कहानी से जुड़े पात्रों से संबंधित ढेरों प्रश्न भी होते हैं। वह कभी खुश होता है तो कभी सोच में पड़ जाता है। उसकी उत्सुकता बढ़ने लगती है। वह बहुत कुछ सुनने, देखने, जानने और सीखने की दिशा में आगे बढ़ने योग्य हो जाता है।

आइए, ज़रा सोचें कि क्या अभिभावक अथवा शिक्षक उपरोक्त वय वर्ग के बच्चों के साथ ऐसी गतिविधियाँ करते हैं? कमोबेश नहीं। दिलचस्प बात तो यह है कि अभिभावक और शिक्षक किसी भी आयु के बच्चे को कमतर ही समझते हैं। आखिर हम बच्चे को समाज का एक हिस्सा क्यों नहीं मानते हैं? उसे वही सम्मान क्यों नहीं देते जिसका वह हकदार है। आखिर क्यों हम उसे 'बच्चा है' कहकर नज़रअंदाज करते रहे हैं? यही कारण है कि बाल साहित्य तो दूर की बात है, हम वाचिक परंपरा का निर्वाह भी नहीं करते। हमें जो कहानियाँ-किस्से याद हैं, वह भी हम बच्चों से साझा नहीं करते।

निष्कर्षतः उपर्युक्त बातों पर ध्यान दिया जाए तो मोटेतौर पर जो तथ्य निकल कर आता है वह यही है कि बच्चों को आरंभ में चित्रों से जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। चित्र बच्चों को आकर्षित करते हैं। यदि खेल-खेल में चित्रों को सीखने-सिखाने का माध्यम बना लिया जाए तो इसका परिणाम विस्मयकारी और चमत्कारी होगा।

भाषा एवं चित्र

भाषा के विकास में चित्रों की भूमिका

सबसे पहले अगर यह समझ लें कि बच्चे खुशी-खुशी अपनी पुस्तक को खोलते हैं, कुछ बातचीत करते हैं, बस्ते में सँभाल कर रखते हैं फिर निकालते हैं, फिर देखते हैं तो इसका मतलब है कि उन्हें पुस्तक से लगाव तो है। अब बात आती है उसे पढ़ने की। पढ़ने से अभिप्राय केवल अक्षर ज्ञान से नहीं है। शब्द, अक्षर, मात्रा, वाक्य, पहचानना, पढ़ना, समझना इस तक पहुँचने के लिए बहुत ज़रूरी है बातचीत — चित्रों पर बातचीत। उनके परिवेश से जुड़े चित्रों पर बातचीत होनी चाहिए। शैक्षिक जगत से जुड़ा

© NCERT not to be republished

हर संवेदनशील व्यक्ति परिचित है कि बच्चे अपने घर और पड़ोस के अनुभव लेकर पाठशाला आते हैं। जब वे पुस्तक पढ़ते हैं और उनके चित्र देखते हैं तो वे पुस्तकों से जुड़ाव महसूस करते हैं। पुस्तकों में चित्रों का उपयोग सीखने की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाता है।

पुस्तकों के चित्र या अतिरिक्त चित्र, बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को उनके अपने अनुभवों और समकालीन घटनाओं से जोड़ने में सक्षम बनाते हैं। इसके साथ ही छात्रों द्वारा कक्षा में लाई जा रही जानकारी का पता लगाने के अवसर भी प्रदान करते हैं। दरअसल चित्र सफल संसाधन हैं। वे ऐसे विषय प्रदान करते हैं जो उस समय प्रासंगिक होते हैं और छात्रों के लिए दिलचस्प हो सकते हैं। इन चित्रों का उपयोग करते हुए सावधानी से नियोजित पाठ, छात्रों के आलोचनात्मक विचार कौशल को विकसित करने में सहायता कर सकते हैं।

चित्रों का उपयोग छात्रों को यह अनुभव कराना है कि कक्षा के बाहर भाषा का उपयोग कैसे किया जाता है और इसके साथ ही यह प्रामाणिक समकालीन भाषा के संपर्क में आने का अवसर भी देता है। पाठ्यपुस्तक के अधिकांश उदाहरण प्रायः भाषा की पुरानी शैली में लिखे गए साहित्यिक स्रोतों से लिए जाते हैं। यही कारण है कि *राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र, अंग्रेज़ी शिक्षण* (रा.शै.अ.प्र.प., 2008, पृ.14) कहता है कि छात्रों को प्रामाणिक पाठों के संपर्क में आने की भी ज़रूरत है जो विद्यार्थियों के लिए नहीं लिखे गए हैं, लेकिन सामान्य पाठकों और श्रोताओं के लिए हैं। इस तरह उनको उस भाषा में संवाद करने में मदद मिलेगी जिसका उपयोग भारत और अन्य देशों में कक्षा के वातावरण के बाहर किया जाता है।

चित्र और उसके लाभ

1. चित्रों को देखकर बच्चा महसूस कर पाएगा कि उसके चारों तरफ दुनिया में क्या कुछ हो रहा है।
2. चित्रों को गौर से देखने और चर्चा करने से बच्चों में भाषायी कौशलों के साथ अवलोकन का कौशल भी विकसित होगा।
3. चित्र बच्चों में भाषायी कौशलों के विकास के साथ उन्हें भाषा की कक्षा में अन्य विषय सीखने के अवसर भी देते हैं।
4. हमारे रोज़मर्रा के जीवन से जुड़ें दृश्य— कक्षा, स्कूल में खेल का मैदान, आधी छुट्टी का समय, खेत-खलिहान, बस का सफ़र आदि के ये चित्र बच्चों की भाषा के विकास की अनंत संभावनाएँ समेटे हुए हैं, उन संभावनाओं को बच्चों के साथ मिलकर शिक्षकों को खोजना चाहिए।
5. पुस्तक में दिए गए चित्र, शब्द और चित्र के सह-संबंध, शब्द पहचानने और पढ़ने की शुरूआत का अवसर देंगे। अनुभव को अंदाज से पढ़ पाने का विश्वास पैदा करेंगे अभिव्यक्ति एवं चिंतन को सक्षम बनाएँगे। बच्चों को चित्र बनाने के भरपूर मौके दें। चित्र बनाना बच्चों के लिए लिखना, सीखने और अर्थ समझने का एक शुरूआती दौर है। चित्र बनाने से उनके लेखन और चित्रकारी में समृद्धता आती है और उनमें रचनात्मकता और सौंदर्यबोध का विकास होता है। बच्चों के बनाए चित्रों को रूढ़ शैली

© NCERT not to be republished

में थोपने की कोशिश कतई न करें बल्कि उन्हें अभिव्यक्ति की आज़ादी दें, बच्चे की कल्पना का संसार अनूठा है। सृजनात्मकता एक उड़ान है, डोर जितनी ढीली छोड़ेंगे उतनी ही ऊपर जाएगी।

6. कविता के साथ दिए चित्र, कल्पना को और विस्तार देने के लिए हैं। बच्चे शिक्षक और शिक्षिका के साथ मिलकर कविता को पढ़ सकते हैं, गा सकते हैं और चित्रों के आधार पर नई तुकबंदी भी कर सकते हैं।
7. भाषा के विकास में कुछ चित्र *रिमझिम-2* में पृ. सं 96 व 97 पर मधुबनी (बिहार), *रिमझिम-1* में पृ. सं 96, 97, 98 पर *वरली* तथा *रिमझिम-4* में पृ. सं 114–119 पर पट्टचित्र (ओडिशा) शैलियों का प्रयोग हुआ है। ये चित्र बच्चों को लोककला से परिचित कराएँगें। अपने इलाके की लोककला शैली के कलाकारों को स्कूल में आमंत्रित कर कुछ सीखने का मौका बच्चों को दें।
8. चित्र, भाषा की जटिलता का छोड़ते हुए भाषा को सफल बनाते हैं। क्योंकि चित्र के साथ ही वह शब्द भी लिखा होता है जिसका चित्र है। इस तरह बच्चे उस चित्र को देखकर उसे पहचान लेते हैं और फिर उस शब्द को बोलकर या पढ़कर भी सुनाते हैं।
9. प्राथमिक स्तर की किसी भी पाठ्यपुस्तक में चित्रों का विशेष स्थान होता है। चित्र पुस्तक को आकर्षक बनाने के साथ विषय को स्पष्ट करने में भी सहायक होते हैं। किताब का आकर्षक आवरण और पृष्ठ सहज ही बच्चों का ध्यान अपनी और आकर्षित लेता है। सुंदर आवरण-पृष्ठ देखते ही बच्चा लपककर किताब को उठाता है, चित्र देखता है, चित्र से बातें करता है। चित्रों को गौर से देखने और चर्चा करने से बच्चों में भाषीय कौशलों के साथ अवलोकन का कौशल भी विकसित होगा।
10. चित्र अपने आप में ही एक भाषा है। बच्चा बिना भाषा के भी सिर्फ़ चित्रों को देखकर अपने भावों, इशारों के द्वारा भी उस वस्तु को समझाया बता सकता है। जिसका चित्र आप उसके सामने रखते हैं। बच्चा जितना जल्दी चित्रों से सीखता है उतना जल्दी वो नीचे लिखे शब्दों या वाक्य से नहीं सीखता।
11. भाषा को कुशलतापूर्वक एवं आसानी से सीखने के सशक्त माध्यमों में से एक माध्यम चित्र भी है। जो बच्चों को प्रारंभिक स्तर पर भाषा सीखने में मदद करते हैं।

भारत के दक्षिण क्षेत्र में प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा पाठ्यपुस्तकों में दृश्य चित्रण का अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम कार्यशाला का आयोजन क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, मैसूरु, कर्नाटक में आयोजित किया गया था। इस कार्यशाला में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु और पुदुचेरी के संसाधकों ने भाग लिया था। प्राकृतिक विपदा के कारण केरल तथा लक्षद्वीप भागीदारी से वंचित थे। इस कार्यशाला में दक्षिण भारत में प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई जा रही पाठ्यपुस्तकों में निहित दृश्य चित्रण का सारगर्भित विचार मंथन हुआ। इसी को आधार बनाते हुए रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली में एक और कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें दृश्य चित्रण अध्ययन

© NCERT not to be republished

के क्षेत्र तथा मानदंडों की पहचान सुनिश्चित की गई। इन्हीं मानदंडों के आधार पर प्रश्नावली का निर्माण किया गया।

रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली द्वारा विकसित प्रश्नावली में तीन भाग हैं। वे क्रमशः क, ख और ग के अंतर्गत विभाजित किए गए हैं। भाग 'क' में शोधकर्ता का विवरण, पाठ्यपुस्तक की जानकारी आदि की सूचना है। भाग 'ख' में दृश्य चित्रों के विभिन्न मानदंडों का विश्लेषण किया गया है। भाग 'ग' में शोधकर्ता का संपूर्ण विवरण एवं उस प्रश्नावली की जवाबदेही तय की गयी है।

प्रश्नावली का सबसे महत्वूर्ण अंश भाग 'ख' है। इसमें दृश्य चित्रण के विभिन्न अंगों का बारीकी से प्रश्नवार विश्लेषण किया गया है। इसके विभिन्न बिंदु निम्नवत हैं—

पाठ्यपुस्तकों का भौतिक मूल्यांकन

(i) पाठ्यपुस्तक का आकार
(ii) मुखपृष्ठ की गुणवत्ता (जी.एस.एम.)
(iii) भीतरी पृष्ठों की गुणवत्ता (जी.एस.एम.)
(iv) मुद्रित अक्षर
(v) कल्पना करने की संभावना

पाठ्यपुस्तकों का दृश्य मूल्यांकन

(i) विविधता
(ii) चित्रों का आकार
(iii) रंग
(iv) संवेदनशीलता

उक्त सभी तथ्यों के आधार पर दक्षिण भारत के विभिन्न राज्यों में प्राथमिक स्तर पर प्रचलित हिंदी की पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन किया गया है। चूँकि तेलंगाना तथा आंध्र प्रदेश की पाठ्यपुस्तकें वर्ष 2014 में बनी हैं, तमिलनाडु और पुदुच्चेरी में हिंदी शिक्षण की वैकल्पिक व्यवस्था न होने के कारण यहाँ के केंद्रीय विद्यालयों में प्रचलित रा.शै.अ.प्र.प.की छठवीं (*वसंत-1*), सातवीं (*वसंत-2*) और आठवीं (*वसंत-3*) का अध्ययन इन्हीं के राज्यों के संसाधकों द्वारा किया गया। कर्नाटक राज्य ने भी अपने यहाँ प्रचलित हिंदी पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण किया।

राज्यों द्वारा सौंपी गई अध्ययन रिपोर्टों के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण बिंदु अथवा सुझाव प्रकाश में आए हैं, जो निम्नवत हैं—

1. सभी राज्यों के संसाधकों ने यह स्वीकार किया कि उनकी पाठ्युपस्तकों का आकार संतोषजनक है, परंतु उनकी बाइंडिंग में सुधार की आवश्यकता है। यह सुझाव रा.शै.अ.प्र.प.पाठ्यपुस्तकों के लिए भी सुझाया गया है। यदि भविष्य में इस पर व्यवस्थित कार्य किया जाए तो दीर्घावधि के लिए पाठ्यपुस्तक उपयोगी होगी।
2. सभी राज्यों ने पाठ्यपुस्तकों के मुखपृष्ठ को आकर्षित बनाने पर कार्य किया है। परंतु इसे विषय-विशेषज्ञों की सहायता से और आकर्षक बनाया जा सकता है। कर्नाटक राज्य सरकार द्वारा विकसित हिंदी की पाठयपुस्तक *वल्लरी* के मुख्यपृष्ठ को और आकर्षक बनाने की आवश्यकता है। पूर्व में विकसित *वल्लरी 1,2,3* के मुख्यपृष्ठ में कोई चित्र अंकित नहीं है। भविष्य में किताबों का निर्माण करने के क्रम में इन बातों का ध्यान रखना है तथा बच्चों के आयु एवं

© NCERT not to be republished

प्रकृति के अनुकुल चित्रों का समावेश मुख्य पृष्ठ पर करना है।

3. जहाँ तक भीतरी पृष्ठों की गुणवत्ता का सवाल है तो रा.शै.अ.प्र.प. की पुस्तकें ठीक हैं, किंतु दक्षिण राज्य सरकारों द्वारा अपेक्षित सहयोग प्राप्त होने पर पाठ्यपुस्तकों को कागज़ की गुणवत्ता को और भी बेहतर (80 से 90 जी एस एम) बनाया जाना चाहिए, क्योंकि किताबों की दीर्घकालिकता बच्चों के लिए आवश्यक है। वे 1 वर्ष तक या उससे ज़्यादा समय तक किताबों का उपयोग कर सकते है। अत: बच्चों की दृष्टि से इसे व्यस्थित बनाना होगा।
4. पाठ्यपुस्तकों में कुछ विशिष्ट बातों को संदर्भित करने के लिए विषय सामग्री को विभिन्न रंगों से रेखांकित करने की ज़रूरत है। दक्षिण भारत के सभी राज्यों में इस पर कार्य नहीं किया गया है। अत: यदि विषय बच्चों के लिए आवश्यक है तो उसे विभिन्न रंगों द्वारा रंग कर बच्चों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जा सकता है।
5. रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्युस्तकों में कल्पना की संभावना को पर्याप्त स्थान दिया गया है, किंतु दुर्भाग्यवश दक्षिण राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में ऐसा नहीं देखा गया है। अतः दक्षिण भारत के राज्यों द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तकों में कल्पना के लिए पर्याप्त स्थान देना होगा। बच्चे इससे अपनी कल्पना को आकार दे सकेंगे। दक्षिण भारत के राज्यों द्वारा विकसित हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में कल्पना के लिए जगह नहीं दी गई है। नई पाठ्यपुस्तक निर्मित करते समय बच्चों की कल्पना के लिए पर्याप्त जगह देनी चाहिए। यदि बच्चों से अपेक्षा की जाए की वह कुछ वस्तुओं पर चित्र बनाएगा तो उन्हें उसके लिए पर्याप्त स्थान दिया जाए ताकि वे वहाँ अपनी कल्पना के अनुसार चित्र बना सकें।
6. चूँकि, राष्ट्रीय स्तर पर रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकों का प्रचलन दिखाई देता है इसलिए इसमें चित्रों की विविधता की व्यापकता दिखाई देती है। वहीं दूसरी ओर दक्षिण राज्य की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की विविधता सीमित होने पर भी उन्होंने इसे व्यापक स्तर पर जोड़ने का प्रयास नहीं किया है। दक्षिण भारत के राज्यों को अपने राज्यों के संसाधनों को पाठ्यपुस्तकों से जोड़ना चाहिए, जैसे— वहाँ की लोक गीत, लोक चित्रकला एवं विशिष्ट व्यक्तित्व अर्थात् यदि कोई व्यक्ति उस राज्य से भारत के लिए विशेष कार्य किया हो तो उसकी जीवनवृत्ति को पाठ्यपुस्तकों में शामिल करके पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं। ऐसा करने से राज्य की भाषा, संस्कृति एवं विशिष्ट व्यक्तित्व सभी पाठ्यपुस्तकों में शामिल हो सकते हैं। ऐसा प्रयास भविष्य में किया जाना चाहिए।
7. जहाँ तक सांस्कृतिक विविधता का प्रश्न है तो इसके कई सुंदर उदाहरण रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकों में दिखाई देते हैं, दक्षिण भारत के राज्यों में विविधता का अभाव देखा गया है।
8. चित्रों में रंगों की अनुकूलता दक्षिण राज्यों के लिए गंभीर मुद्दा है। इसमें अधिकांशतः चित्र वयोनुकूल नहीं है। रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकों में अंकित कुछ चित्र परिस्थिति एवं संदर्भ के अनुसार अपेक्षित हैं। दक्षिण भारतीय

© NCERT not to be republished

राज्यों में बनाए गए चित्रों में प्रयोग किए रंग अनुकूल नहीं है। कहीं चिड़ियों की आकृति अपेक्षाकृत बड़ी है तो कहीं खेत में काम करने वाले किसान की तस्वीर में उभार नहीं है या फसलों के रंग अनुकूल नहीं है। अर्थात चित्रों के आकार एवं रंगों पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

9. संवेदनशीलता का मुद्दा निरंतर परिवर्तनशील है। दक्षिण भारत के राज्यों में प्रचलित पाठ्यपुस्तकों में जो कार्य अब तक हुए हैं उससे और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। जहाँ तक रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकों का सवाल है तो संवेदनशीलता व्याप्त है वहीं दक्षिण भारतीय राज्यों द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों में संवेदनशीलता का अभाव है। इसे एक-दो उदाहरणों द्वारा दिखाया जा सकता है। तेलंगाना राज्य द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तक *बाल बगीचा-1* में मैदान की तस्वीर दी गई है। इसमें कई क्रियाएँ हो रहीं है परंतु सभी आकृतियों में बच्चों एवं शिक्षकों के भाव शून्य है। अत: चित्रों को व्यवस्थित बनाने की ज़रूरत है उनके दृश्य पटल को व्यवस्थित एवं संवेदनाओं से भरा हुआ दिखाना चाहिए। ऐसा प्रयास पूर्व में नहीं किया गया है। कर्नाटक राज्य द्वारा विकसित *वल्लरी-1* के पाठ 8 (मैं, हम, तू, तुम, आप) में दिए गए तस्वीर भी भाव शून्यता से बनाए गए प्रतीत होते हैं। अत: किसान, छात्र की तस्वीर में भावों का उभारना चाहिए इन चित्रों में भाव का उभार नहीं हुआ है। कहने का तात्पर्य है कि चित्रों को हमें बाल चित्र विशेषज्ञों की मदद से बनाना चाहिए जिससे उनमें भाव उभर कर आए और बच्चे विभिन्न पात्रों से अपन जुड़ाव स्थापित कर सकें।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि भारत के दक्षिण क्षेत्र में प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा पाठ्यपुस्तकों में दृश्य चित्रण का अध्ययन एक ऐसी पहल है जो भविष्य में किताबों पर काम करने के लिए एक दिशा प्रदान करता है। अतः भारत के शेष राज्यों पर भी इसी तरह का अध्ययन कार्य किया जाना चाहिए जिससे पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता में उत्तरोत्तर वृद्धि हो।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प.. 2006. *कैसे पढ़ाएँ रिमझिम शिक्षक संदर्शिका (भाग 1)*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

——— 2006. *रिमझिम-1*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

——— 2006. *रिमझिम-3*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

——— 2006. *वसंत भाग 1*, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

——— 2007. *रिमझिम-2*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

——— 2007. *रिमझिम-4*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished

——— 2007. *वसंत भाग 2*, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

——— 2008. *रिमझिम-5*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

——— 2008. *वसंत भाग 3*, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

——— 2009. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. भारतीय भाषाओं का शिक्षण. राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

——— 2010. *कैसे पढ़ाएँ रिमझिम शिक्षक संदर्शिका (भाग 2)*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

——— 2018. *भाषा शिक्षण हिंदी (भाग 1)*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

बाल बगीचा भाग 1, 2012. तेलंगाना राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित. हैदराबाद.

बाल बगीचा भाग 2, 2012. तेलंगाना राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित. हैदराबाद.

बाल बगीचा भाग 3, 2013. तेलंगाना राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित. हैदराबाद.

बाल-वसंत भाग 1, 2012. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हैदराबाद.

बाल-वसंत भाग 2, 2013. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हैदराबाद.

बाल-वसंत भाग 3, 2012. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हैदराबाद.

हिंदी वल्लरी भाग 1, 2015. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, बंगलौर.

हिंदी वल्लरी भाग 2, 2016. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, बंगलौर.

हिंदी वल्लरी भाग 3, 2015. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, बंगलौर.

© NCERT not to be republished